MTTP–001

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

अनुवाद परियोजना

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

Scanned with CamScanner

अनुवाद परियोजना
(एम.टी.टी.पी.-001)

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

जैसा कि आपको बताया जा चुका है कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.जी.सी. बी.एच.टी.) को पूरा करने के लिए आपको चार–चार क्रेडिट के चार पाठ्यक्रम करने होंगे। इस स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम का चौथा पाठ्यक्रम (एम.टी.टी.पी.–001) 'अनुवाद परियोजना' का है। इस परियोजना के अंतर्गत आपको दी गई सामग्री का अनुवाद करना है। अनुवाद के लिए सामग्री संलग्न है। इसका अनुवाद करके आपको मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करना है। ध्यान रहे कि यह 'अनुवाद परियोजना' एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम के समकक्ष है। इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

परियोजना करने का तरीका

प्रस्तुत सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इससे आप समझ जाएँगे कि यह किस विषय से संबंधित है और इसमें प्रमुखतया क्या कहा गया है। इसके बाद आप इस सामग्री में से वे शब्द और मुहावरे आदि छाँटिए जिनका अर्थ अथवा जिनके हिंदी पर्याय आपको पता नहीं हैं। इन शब्दों को एक कागज़ पर नोट कर लीजिए। ध्यान दीजिए कि अनूद्य सामग्री के अनुवाद करते समय आपको कौन–कौन से कोश देखने की जरूरत है। विषय के अनुरूप समुचित कोशों में से उन शब्दों के पर्याय नोट कर लीजिए।

अब अनूद्य सामग्री को एक बार पुनः पढ़िए। गौर कीजिए कि अब की बार यह आपको ज्यादा अच्छी तरह समझ आती है कि नहीं। यदि कोई अंश समझ में न आ रहा हो तो उसे फिर से पढ़िए और पता लगाइए कि कठिनाई कहाँ है – शब्दों का अर्थ समझने में अथवा वाक्य–विन्यास को समझने में। यदि कोई वाक्य न समझ आ रहा हो तो उसे दूसरी बार, तीसरी बार पढ़िए।

इस सामग्री में प्रयुक्त संक्षिप्तियों पर ध्यान दीजिए। उनके पूर्ण रूप क्या हैं, जानने की कोशिश कीजिए। अधिकांश संक्षिप्तियों के पूर्ण रूप आपको इस सामग्री में ही मिल जाएँगे।

इस तरह अनूद्य सामग्री का अर्थ भली–भाँति समझ लेने के पश्चात उसका अनुवाद आरंभ कीजिए। अनुवाद करते समय भी शब्दकोश का भरपूर उपयोग कीजिए। जिन शब्दों के अर्थ आपको पता हैं उनके लिए भी शब्दकोश देखिए ताकि विषय और संदर्भ के अनुकूल पर्यायों का चयन कर सकें। वाक्य–विन्यास लक्ष्य भाषा (अर्थात् हिंदी/मलयालम) की प्रकृति के अनुसार कीजिए। यानी आपका बनाया वाक्य ऐसा लगे कि आप अनुवाद नहीं कर रहे बल्कि उस भाषा में मूल रूप में लिख रहे हैं। ऐसा तभी होगा जब आपकी वाक्य–रचना स्रोत में कही गई बात का अनुकरण न होकर लक्ष्य भाषा की कथन–शैली के अनुरूप और सहज होगी।

एक पैराग्राफ अथवा एक पृष्ठ का अनुवाद करने के बाद अपने अनुवाद को मूल सामग्री से मिलाइए और देखिए कि आपके अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूल कथन में कहा गया है। यदि अंतर दिखाई दे तो अपने अनुवाद में सुधार कीजिए। पूरी तरह आवश्स्त होने के बाद अनुवाद को आगे बढ़ाइए। अगले पैराग्राफ/पृष्ठ के अनुवाद के बाद फिर यही जाँच–प्रक्रिया दोहराइए और अनुवाद करते जाइए।

अनुवाद पूरा करने के पश्चात उसे एक बाद फिर मूल सामग्री से मिलाइए और जाँच कीजिए कि आपका अनुवाद और मूल सामग्री समान अर्थ प्रकट करते हैं। यह भी जाँच कीजिए कि कहीं कोई पैराग्राफ, वाक्य अथवा वाक्यांश अनुवाद होने से छूट तो नहीं गया है। तत्पश्चात अनूदित सामग्री को साफ–साफ लिखकर हस्तलिखित रूप में लिखिए अथवा टंकण की व्यवस्था कीजिए।

Scanned with CamScanner

अनुवाद परियोजना की प्रस्तुति

- अनुवाद परियोजना फुलस्केप आकार के कागज पर पर्याप्त हाशिया छोड़ते हुए एक तरफ टंकित कराके और बाइडिंग कराके प्रस्तुत करें।

- अनूदित परियोजना के आरंभिक पृष्ठ पर आपके इस कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम कोड और शीर्षक, नामांकन संख्या, नाम, पता, अध्ययन केंद्र का कोड लिखा होना चाहिए और अंत में आपके हस्ताक्षर एवं प्रस्तुति की तिथि का उल्लेख होना चाहिए। इस तरह, आपकी 'अनुवाद परियोजना' का आरंभिक पृष्ठ इस प्रकार होगा :

कार्यक्रम का शीर्षक :	बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
पाठ्यक्रम कोड :	एम.टी.टी.पी.–001
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	अनुवाद परियोजना
अध्ययन केंद्र का नामः	....
नामांकन संख्या :	....
नाम :	....
पता :	....
	....
हस्ताक्षर :	....
तिथि :	....

- अनुवाद परियोजना के साथ एक **प्रमाण–पत्र भी लगाएँ** जिसमें आपके अपने हस्ताक्षर सहित यह प्रमाणित किया गया हो कि आपने यह अनुवाद–कार्य स्वयं किया है और इसके लिए किसी व्यक्ति की सहायता नहीं ली गई है।

- **अनुवाद परियोजना विश्वविद्यालय में निम्नलिखित पते पर व्यक्तिगत रूप से अथवा पंजीकृत डाक द्वारा भेजें** :

  कुलसचिव
  विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग (SED)
  इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

अनुवाद परियोजना प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि

जनवरी 2026 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **31 मई, 2026**
जुलाई 2026 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 नवंबर, 2026**

अंतिम तिथि के बाद भेजी गई परियोजना का मूल्यांकन विलंब से होगा और आप इस अध्ययन कार्यक्रम को देर से पूरा कर सकेंगे।

कृपया ध्यान दें :

प्रस्तुत की गई अनुवाद परियोजना की एक प्रति (फोटोकॉपी) अपने पास अवश्य रख लें।

शुभकामनाओं सहित।

Scanned with CamScanner

1. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

(क) আশ্রমের শিক্ষা

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

প্রাচীন ভারতের তপোবন জিনিসটার ঠিক বাস্তব রূপ কী তার ঐতিহাসিক ধারণা আজ সহজ নয়। তপোবনের যে প্রতিরূপ স্থায়ীভাবে আঁকা পড়েছে ভারতের চিত্তে ও সাহিত্যে সে হচ্ছে একটি কল্যাণময় কল্পমূর্তি, বিলাসমোহমুক্ত প্রাণবান আনন্দের মূর্তি।

আধুনিক কালে জন্মেছি। কিন্তু, এই ছবি রয়ে গেছে আমারও মনে। বর্তমান যুগের বিদ্যায়তনে ভাবালোকের সেই তপোবনকে রূপলোকে প্রকাশ করবার জন্যে একদা কিছুকাল ধরে আমার মনে আগ্রহ জেগেছিল।

দেখেছি মনে মনে তপোবনের কেন্দ্রস্থলে গুরুকে। তিনি যন্ত্র নন, তিনি মানুষ—নিষ্ক্রিয়ভাবে মানুষ নন, সক্রিয়ভাবে; কেননা মনুষ্যত্বের লক্ষ্য-সাধনেই তিনি প্রবৃত্ত। এই তপস্যার গতিমান ধারায় শিষ্যের চিত্তকে গতিশীল করে তোলা তাঁর আপন সাধনারই অঙ্গ। শিষ্যের জীবন প্রেরণা পায় তাঁর অব্যবহিত সঙ্গ থেকে। নিত্যজাগরূক মানবচিত্তের এই সঙ্গ জিনিসটি আশ্রমের শিক্ষার সবচেয়ে মূল্যবান উপাদান। তার সেই মূল্য অধ্যাপনার বিষয়ে নয়,-উপকরণে নয়, পদ্ধতিতে নয়। গুরুর মন প্রতি মুহূর্তে আপনাকে পাচ্ছে বলেই আপনাকে দিচ্ছে। পাওয়ার আনন্দ সপ্রমাণ করছে নিজের সত্যতা দেওয়ার আনন্দেই।

একদা একজন জাপানি ভদ্রলোকের বাড়িতে ছিলাম, বাগানের কাজে ছিল তাঁর বিশেষ শখ। তিনি বৌদ্ধ, মৈত্রীর সাধক। তিনি বলতেন, 'আমি ভালোবাসি গাছপালা। তরুলতায় সেই ভালোবাসার শক্তি প্রবেশ করে, ওদের ফুলে ফলে জাগে সেই ভালোবাসারই প্রতিক্রিয়া।' বলা বাহুল্য, মানবচিত্তের মালীর সম্বন্ধে এ কথা সম্পূর্ণ সত্য। মনের সঙ্গে মন যথার্থভাবে মিলতে থাকলে আপনি জাগে খুশি। সেই খুশি সৃজনশক্তিশীল। আশ্রমের শিক্ষাদান এই খুশির দান। যাদের মনে কর্তব্যবোধ আছে কিন্তু সেই খুশি নেই, তাদের দোসরা পথ। গুরুশিষ্যের মধ্যে পরস্পরসাপেক্ষ সহজ সম্বন্ধকেই আমি বিদ্যাদানের প্রধান মাধ্যস্থ্য বলে জেনেছি।

আরও একটি কথা মনে ছিল। যে গুরুর অন্তরে ছেলেমানুষটি একেবারে শুকিয়ে কাঠ হয়েছে তিনি ছেলেদের ভার নেবার অযোগ্য। উভয়ের মধ্যে শুধু সামীপ্য নয়, আন্তরিক সাযুজ্য ও সাদৃশ্য থাকা চাই, নইলে দেনা-পাওনার নাড়ীর যোগ থাকে না। নদীর সঙ্গে যদি প্রকৃত শিক্ষকের তুলনা করি তবে বলব, কেবল ডাইনে বাঁয়ে কতকগুলো বুড়ো বুড়ো উপনদীর যোগেই নদী পূর্ণ নয়। তার আদি ঝর্নার ধারাটি মোটা মোটা পাথরগুলোর মধ্যে হারিয়ে যায় নি। যিনি জাত-শিক্ষক ছেলেদের ডাক শুনলেই তাঁর ভিতরকার আদিম ছেলেটা আপনি বেরিয়ে আসে। মোটা গলার ভিতর থেকে উচ্ছ্বসিত হয় প্রাণে-ভরা কাঁচা হাসি। ছেলেরা যদি কোনো দিক থেকেই তাঁকে স্বশ্রেণীয় জীব বলে চিনতে না পারে, যদি মনে করে 'লোকটা যেন একটা প্রাগৈতিহাসিক মহাকায় প্রাণী', তবে নির্ভয়ে তাঁর কাছে হাত বাড়াতেই পারবে না। সাধারণত আমাদের গুরুরা সর্বদা নিজের প্রবীণতা অর্থাৎ নবীনের কাছ থেকে দূরবর্তিতা সপ্রমাণ করতে ব্যগ্র; প্রায়ই ওটা সস্তায় কর্তৃত্ব করবার প্রলোভনে। ছেলেদের পাড়ায় চোপদার না নিয়ে এগোলে পাছে সম্ভ্রম নষ্ট হয় এই ভয়ে তাঁরা সতর্ক। তাঁদের সঙ্গে সঙ্গে ধ্বনি উঠছে 'চুপ চুপ'; তাই পাকা শাখায় কচি শাখায় ফুল ফোটাবার ফল ফলাবার মর্মগত সহযোগ রুদ্ধ হয়ে থাকে; চুপ করে যায় ছেলেদের চিত্তে প্রাণের ক্রিয়া।

আর একটা কথা আছে। ছেলেরা বিশ্বপ্রকৃতির অত্যন্ত কাছের। আরামকেদারায় তারা আরাম চায় না, সুযোগ পেলেই গাছের ডালে তারা চায় ছুটি। বিরাট প্রকৃতির নাড়ীতে নাড়ীতে প্রথম প্রাণের বেগ নিগূঢ়ভাবে চঞ্চল। শিশুর প্রাণে সেই বেগ গতিসঞ্চার করে। বয়স্কদের শাসনে অভ্যাসের দ্বারা যে-পর্যন্ত তারা অভিভূত না হয়েছে সে পর্যন্ত কৃত্রিমতার জাল থেকে মুক্তি পাবার জন্যে তারা ছটফট করে। আরণ্য ঋষিদের মনের মধ্যে ছিল চিরকালের অমর ছেলে। তাই কোনো বৈজ্ঞানিক প্রমাণের অপেক্ষা না রেখে তাঁরা বলেছিলেন, এই যা-কিছু সমস্তই প্রাণ হতে নিঃসৃত হয়ে প্রাণেই কম্পিত হচ্ছে। এ কি বের্গ্‌সঁ-এর বচন! এ মহান্ শিশুর বাণী। বিশ্বপ্রাণের স্পন্দন লাগতে দাও ছেলেদের দেহে মনে, শহরের বোবা কালা মরা দেয়ালগুলোর বাইরে।

তার পরে আশ্রমের প্রাত্যহিক জীবনযাত্রার কথা। মনে পড়ছে কাদম্বরীতে একটি বর্ণনা; তপোবনে আসছে সন্ধ্যা, গোষ্ঠে-ফিরে-আসা পাটল হোমধেনুটির মতো। শুনে মনে জাগে, সেখানে গোরু-চরানো, গোদোহন, সমিধ-কুশ-আহরণ, অতিথিপরিচর্যা, যজ্ঞবেদীরচনা আশ্রমবালক-বালিকাদের দিনকৃত্য। এইসব কর্মপর্যায়ের দ্বারা তপোবনের সঙ্গে নিরন্তর মিলে যায় তাদের নিত্যপ্রবাহিত জীবনের ধারা। সহকারিতার সখ্য-বিস্তারে আশ্রম হতে থাকে প্রতি ক্ষণে আশ্রমবাসীদের নিজ হাতের রচনা। আমাদের আশ্রমে সতত-উদ্যমশীল এই কর্মসহযোগিতা কামনা করছি।

মানুষের প্রকৃতিতে যেখানে জড়তা আছে সেখানে প্রাত্যহিক জীবনযাত্রা কুশ্রী ও মলিন। স্বভাবের বর্বরতা সেখানে প্রকাশে বাধা পায় না। ধনীসমাজে আন্তরিক শক্তির অভাব থাকলেও বাহ্যিক উপকরণপ্রাচুর্যে কৃত্রিম উপায়ে এই দীনতাকে চাপা দিয়ে রাখা যায়। আমাদের দেশে প্রায় সর্বত্রই ধনীগৃহে সদর-অন্দরের প্রভেদ দেখলে এই প্রকৃতিগত তামসিকতা ধরা পড়ে।

নিজের চার দিককে নিজের চেষ্টায় সুন্দর সুশৃঙ্খল ও স্বাস্থ্যকর করে তোলার দ্বারা একত্র বাসের সতর্ক দায়িত্বের অভ্যাস বাল্যকাল থেকে সহজ করা চাই। একজনের শৈথিল্য অন্যের অসুবিধা অস্বাস্থ্য ও ক্ষতির কারণ হতে পারে, এই বোধটি সভ্য জীবনযাত্রার ভিত্তিগত। সাধারণত আমাদের দেশের গার্হস্থ্যে এই বোধের ত্রুটি সর্বদাই দেখা যায়।

সহযোগিতার সভ্য নীতিকে প্রত্যহ সচেতন করে তোলা আশ্রমের শিক্ষার প্রধান সুযোগ। সুযোগটিকে সফল করবার জন্যে শিক্ষার প্রথম পর্বে উপকরণলাঘব অত্যাবশ্যক। একান্ত বস্তুপরায়ণ স্বভাবে প্রকাশ পায় চিত্তবৃত্তির স্থূলতা। সৌন্দর্য এবং সুব্যবস্থা মনের জিনিস। সেই মনকে মুক্ত করা চাই কেবল আলস্য এবং অনৈপুণ্য থেকে নয়, বস্তুলুব্ধতা থেকেও। রচনাশক্তির আনন্দ

Scanned with CamScanner

ততই সত্য হয় যতই তা জড়বাহুল্যের বন্ধন থেকে মুক্ত হতে পারে। বাল্যকাল থেকেই ব্যবহারসামগ্রী সুনিয়ন্ত্রিত করবার আত্মশক্তিমূলক শিক্ষা আমাদের দেশে অত্যন্ত উপেক্ষিত হয়। সেই বয়সেই প্রতিদিন অল্প কিছু উপকরণ, যা সহজে হাতের কাছে পাওয়া যায়, তাই দিয়েই সৃষ্টির আনন্দকে উদ্ভাবিত করবার চেষ্টা যেন নিরলস হতে পারে এবং সেইসঙ্গেই সাধারণের সুখ স্বাস্থ্য সুবিধা-বিধানের কর্তব্যে ছাত্রেরা যেন আনন্দ পেতে শেখে, এই আমার কামনা।

আপন পরিবেশের প্রতি ছেলেদের আত্মকর্তৃত্বচর্চাকে আমাদের দেশে অসুবিধাজনক আপদজনক ও ঔদ্ধত্য মনে ক'রে সর্বদা আমরা দমন করি। এতে ক'রে পরনির্ভরতার লজ্জা তাদের চলে যায়, পরের প্রতি আব্দার বেড়ে ওঠে, এমন-কি, ভিক্ষুকতার ক্ষেত্রেও তাদের অভিমান প্রবল হতে থাকে; তারা আত্মপ্রসাদ পায় পরের ত্রুটি নিয়ে কলহ করে। এই লজ্জাকর দীনতা চার দিকে সর্বদাই দেখা যাচ্ছে। এর থেকে মুক্তি পাওয়াই চাই।

মনে আছে ছাত্রদের প্রাত্যহিক কাজে যখন আমার যোগ ছিল তখন এক দল বয়স্ক ছাত্রদের পক্ষ থেকে আমার কাছে নালিশ এল যে, অন্নভরা বড়ো বড়ো ধাতুপাত্র পরিবেশনের সময় মেজের উপর দিয়ে টানতে টানতে তার তলা ক্ষয়ে গিয়ে ঘরময় নোংরামি ছড়িয়ে পড়ে। আমি বললেম, 'তোমরা পাচ্ছ দুঃখ, অথচ তাকিয়ে আছ আমি এর প্রতিবিধান করব। এই সামান্য কথাটা তোমাদের বুদ্ধিতে আসছে না যে, ঐ পাত্রটার নীচে একটা বিড়ে বেঁধে দিলেই ঐ ঘর্ষণ থামে। চিন্তা করতে পার না তার একমাত্র কারণ, তোমরা এইটাই স্থির করে রেখেছ যে, নিষ্ক্রিয়ভাবে ভোক্তৃত্বের অধিকারই তোমাদের, আর কর্তৃত্বের অধিকার অন্যের। এতে আত্মসম্মান থাকে না।'

শিক্ষার অবস্থায় উপকরণের কিছু বিরলতা, আয়োজনের কিছু অভাব থাকাই ভালো; অভ্যস্ত হওয়া চাই স্বল্পতায়। অনায়াসে-প্রয়োজন-জোগানোর দ্বারা ছেলেদের মনটাকে আদুরে করে তোলা তাদের নষ্ট করা। সহজেই তারা যে এত-কিছু চায় তা নয়। আমরাই বয়স্ক লোকের চাওয়াটা কেবলই তাদের উপর চাপিয়ে তাদেরকে বস্তুর নেশায় দীক্ষিত ক'রে তুলি। শরীরমনের শক্তির সম্যক্ চর্চা সেখানেই ভালো করে সম্ভব যেখানে বাইরের সহায়তা অনতিশয়। সেখানে মানুষের আপনার সৃষ্টি-উদ্যম আপনি জাগে। যাদের না জাগে প্রকৃতি তাদেরকে আবর্জনার মতো ঝেঁটিয়ে ফেলে দেয়। আত্মকর্তৃত্বের প্রধান লক্ষণ সৃষ্টিকর্তৃত্ব। সেই মানুষই যথার্থ স্বরাট আপনার রাজ্য যে আপনি সৃষ্টি করে। আমাদের দেশে অতিলালিত ছেলেরা সেই স্বচেষ্টতার চর্চা থেকে প্রথম হতেই বঞ্চিত। তাই আমরা অন্যদের শক্ত হাতের চাপে পরের নির্দিষ্ট নমুনামত রূপ নেবার জন্যে কর্দমাক্ত ভাবে প্রস্তুত।

এই উপলক্ষে আর-একটা কথা বলবার আছে। গ্রীষ্মপ্রধান দেশে শরীরতন্ত্রের শৈথিল্য বা অন্য যে কারণেই হোক, আমাদের মানস প্রকৃতিতে ঔৎসুক্যের অত্যন্ত অভাব। একবার আমেরিকা থেকে জল-তোলা বায়ুচক্র আনিয়েছিলুম। আশা ছিল, প্রকাণ্ড এই যন্ত্রটার ঘূর্ণিপাখার চালনা দেখতে ছেলেদের আগ্রহ হবে। কিন্তু দেখলুম অতি অল্প ছেলেই ভালো ক'রে ওটার দিকে তাকালে। ওরা নিতান্তই আন্দা ভাবে ধরে নিলে, ওটা যা-হোক একটা জিনিস, জিজ্ঞাসার অযোগ্য।

নিরৌৎসুক্যই আন্তরিক নির্জীবতা। আজকের দিনে যে-সব জাতি পৃথিবীর উপর প্রভাব বিস্তার করেছে, সমস্ত পৃথিবীর সব-কিছুরই 'পরে তাদের অপ্রতিহত ঔৎসুক্য। এমন দেশ নেই, এমন কাল নেই, এমন বিষয় নেই, যার প্রতি তাদের মন ধাবিত না হচ্ছে। তাদের এই সজীব চিত্তশক্তি জয়ী হল সর্বজগতে।

পূর্বেই আভাস দিয়েছি, আশ্রমের শিক্ষা পরিপূর্ণভাবে বেঁচে থাকবার শিক্ষা। মরা মন নিয়েও পরীক্ষায় প্রথম শ্রেণীর উর্ধ্বশিখরে ওঠা যায়, আমাদের দেশে প্রত্যহ তার পরিচয় পাই। দেখা যায় অতি ভালো কলেজি ছেলেরা পদবী অধিকার করে, বিশ্ব অধিকার করে না। প্রথম থেকেই আমার সংকল্প ছিল আশ্রমের ছেলেরা চার দিকের অব্যবহিত-সম্পর্ক-লাভে উৎসুক হয়ে থাকবে; সন্ধান করবে, পরীক্ষা করবে, সংগ্রহ করবে। এখানে এমন-সকল শিক্ষক সমবেত হবেন যাঁদের দৃষ্টি বইয়ের সীমানা পেরিয়ে; যাঁরা চক্ষুষ্মান্, যাঁরা সন্ধানী, যাঁরা বিশ্বকুতূহলী, যাঁদের আনন্দ প্রত্যক্ষ জ্ঞানে।

সব-শেষে বলব যেটাকে সব-চেয়ে বড়ো মনে করি এবং যেটা সব-চেয়ে দুর্লভ। তাঁরাই শিক্ষক হবার উপযুক্ত যাঁরা ধৈর্যবান। ছেলেদের প্রতি স্বভাবতই যাঁদের স্নেহ আছে এই ধৈর্য তাঁদেরই স্বাভাবিক। শিক্ষকদের নিজের চরিত্র সম্বন্ধে গুরুতর বিপদের কথা এই যে, যাদের সঙ্গে তাঁদের ব্যবহার তারা ক্ষমতায় তাঁদের সমকক্ষ নয়। তাদের প্রতি সামান্য কারণে বা কাল্পনিক কারণে অসহিষ্ণু হওয়া, তাদের বিদ্রূপ করা, অপমান করা, শাস্তি দেওয়া অনায়াসেই সম্ভব। দুর্বল পরজাতিকে শাসন করাই যাদের কাজ তারা যেমন নিজের অগোচরেও সহজেই অন্যায়প্রবণ হয়ে ওঠে, এও তেমনি। ক্ষমতা-ব্যবহারের স্বাভাবিক যোগ্যতা যাদের নেই অক্ষমের প্রতি অবিচার করতে কেবল যে তাদের বাধা থাকে না তা নয়, তাতে তাদের আনন্দ। ছেলেরা অবোধ হয়ে দুর্বল হয়েই মায়ের কোলে আসে, এইজন্যে তাদের রক্ষার প্রধান উপায়—মায়ের মনে অপর্যাপ্ত স্নেহ। তৎসত্ত্বেও অসহিষ্ণুতা ও শক্তির অভিমান স্নেহকে অতিক্রম করেও ছেলেদের 'পরে অন্যায় অত্যাচারে প্রবৃত্ত করে, ঘরে ঘরে তার প্রমাণ পাই। ছেলেদের কঠিন দণ্ড ও চরম দণ্ড দেবার দৃষ্টান্ত যেখানে দেখা যায় প্রায়ই সেখানে মূলত শিক্ষকেরাই দায়ী। তাঁরা দুর্বলমনা বলেই কঠোরতা দ্বারা নিজের কর্তব্যকে সহজ করতে চান।

রাষ্ট্রতন্ত্রেই হোক আর শিক্ষাতন্ত্রেই হোক, কঠোর শাসননীতি শাসয়িতারই অযোগ্যতার প্রমাণ। শক্তস্য ভূষণং ক্ষমা। ক্ষমা যেখানে ক্ষীণ সেখানে শক্তিরই ক্ষীণতা।

(খ) তিতাস একটি নদীর নাম

অদ্বৈত মল্লবর্মন

তিতাস একটি নদীর নাম। তার কূলজোড়া জল, বুকভরা ঢেউ, প্রাণ ভরা উচ্ছ্বাস।

স্বপ্নের ছন্দে সে বহিয়া যায়।

ভোরের হাওয়ায় তার তন্দ্রা ভাঙ্গে, দিনের সূর্য তাকে তাতায়;

Scanned with CamScanner

রাতের চাঁদ ও তারারা তাকে নিয়া ঘুম পাড়াইতে বসে, কিন্তু পারে না।

মেঘনা-পদ্মার বিরাট বিভীষিকা তার মধ্যে নাই। আবার রমু মোড়লের মরাই, যদু পণ্ডিতের পাঠশালার পাশ দিয়া বহিয়া যাওয়া শীর্ণ পল্লীতটিনীর চোরা কাঙ্গালপনাও তার নাই। তিতাস মাঝারি নদী। দুষ্ট পল্লীবালক তাকে সাঁতরাইয়া পার হইতে পারে না। আবার ছোট নৌকায় ছোট বউ নিয়া মাঝি কোনদিন ওপারে যাইতে ভয় পায় না।

তিতাস শাহী মেজাজে চলে। তার সাপের মত বক্রতা নাই, কৃপণের মতো কুটিলতা নাই। কৃষ্ণপক্ষের ভাঁটায় তার বুকের খানিকটা শুষিয়া নেয়, কিন্তু কাঙ্গাল করে না। শুক্লপক্ষের জোয়ারের উদ্দীপনা তাকে ফোলায়, কিন্তু উদ্বেল করে না।

কত নদীর তীরে একদা নীল-ব্যাপারীদের কুঠি-কেল্লা গড়িয়া উঠিয়াছিল। তাদের ধ্বংসাবশেষ এখনও খুঁজিয়া পাওয়া যায়। কত নদীর তীরে মোগল-পাঠানের তাঁবু পড়িয়া আছে, মগদের ছিপনৌকা রক্ত-লড়াইয়ে মাতিয়াছে—উহাদের তীরে তীরে কত যুদ্ধ হইয়াছে। মানুষের রক্তে হাতিঘোড়ার রক্তে সে সব নদীর জল কত লাল হইয়াছে। আজ হয়ত তারা শুকাইয়া গিয়াছে, কিন্তু পুঁথির পাতায় রেখ্ কাটিয়া রাখিয়াছে। তিতাসের বুকে তেমন কোন ইতিহাস নাই। সে শুধু একটা নদী।

তার তীরে বড় বড় নগরী বসানো নাই। সওদাগরের নৌকারা পাল তুলিয়া তার বুকে বিচরণ করিতে আসে না। ভূগোলের পাতায় তার নাম নাই।

ঝরণা থেকে জল টানিয়া পাহাড়ি ফুলেদের ছুঁইয়া ছুঁইয়া উপল ভাঙিয়া নামিয়া আসার আনন্দ কোনকালে সে পায় নাই। অসীম সাগরের বিরাট চুম্বনে আত্মবিলয়ের আনন্দও কোনকালে তার ঘটিবে না। দুরন্ত মেঘনা নাচিতে নাচিতে কোনকালে কোন অসতর্ক মুহূর্তে পা ফসকাইয়াছিল; বা তীরটা একটু মচকাইয়া গিয়া ভাঙিয়া যায়। স্রোত আর ঢেউ সেখানে প্রবাহের সৃষ্টি করে। ধারা সেখানে নরম মাটি খুঁজিয়া, কাটিয়া, ভাঙিয়া, দুমড়াইয়া পথ সৃষ্টি করিতে থাকে। এক পাকে শত শত পল্লী দুই পাশে রাখিয়া অনেক জঙ্গল অনেক মাঠ-ময়দানের ছোঁয়া লইয়া ঘুরিয়া আসে—মেঘনার গৌরব আবার মেঘনার কোলেই বিলীন হইয়া যায়। এই তার ইতিহাস। কিন্তু সে কি আজকের কথাও কেউ মনেও করে না কিসে তার উৎপত্তি হইল। শুধু জানে সে একটি নদী। অনেক দুরপাল্লার পথ বাহিয়া ইহার দুই মুখ মেঘনায় মিশিয়াছে। পল্লীরমণীর কাঁকনের দুই মুখের মধ্যে যেমন একটু ফাঁক থাকে, তিতাসের দুই মুখের মধ্যে রহিয়াছে তেমনি একটুখানি ফাঁক—কিন্তু কাঁকনের মতই তার বলয়াকৃতি।

অনেক নদী আছে বর্ষার অকুণ্ঠ প্লাবনে ডুবিয়া তারা নিশ্চিহ্ন হইয়া যায়। পারের কোনো হদিস থাকে না, সবদিক একাকার। কেউ তখন বলিতে পারে না এখানে একটি নদী ছিল। সুদিনে আবার তাদের উপর বাঁশের সাঁকোর বাঁধ পড়ে। ছেলেমেয়ে বুড়া-বুড়িরা পর্যন্ত একখানা বাঁশে হাত রাখিয়া আর একখানা বাঁশে পা টিপিয়া টিপিয়া পার হইয়া যায়। ছেলে কোলে নারীরাও যাইতে পারে। নৌকাগুলি অচল হয়। মাঝিরা কোমরে দড়ি বাঁধিয়া সেগুলিকে টানিয়া নেয়। এপারে ওপারে ক্ষেত। চাষীরা দিনের রোদে তাতিয়া কাজ করে। এপারের চাষী ওপারের জনকে ডাকিয়া ঘরের খবর জিজ্ঞাসা করে। ওপারে চাষী ঘাম মুছিয়া জবাব দেয়। গরুগুলি নামিয়া স্নান করিতে চেষ্টা করে। অবগাহন স্নান। কিন্তু গা ডোবে না। কাক-স্নান করা মাত্র সম্ভব হয় কোন রকমে। নারীরা কোমরজলে গা ডুবাইবার চেষ্টায় উবু হইয়া দুই হাতে ঢেউ তুলিয়া নীচু-করা ঘাড়ে-পিঠে জল দিয়া স্নানের কাজ শেষ করে। শিশুদের ডুবিবার ভয় নাই বলিয়া মায়েরা তাদের জলে ছাড়িয়া দিয়াও নিরুদ্বেগে বাসন মাজে, কাপড় কাচে, আর এক পয়সা দামের কার্বলিক সাবানে পা ঘষে। অল্প দূরে ঘর। পুরুষ মানুষে ডাক দিলে এখান হইতে শোনা যাইবে; তাই ব্যস্ততা নাই।

কিন্তু সত্যি কি ব্যস্ততা নাই? যে মানুষটা এক গা ঘাম লইয়া ক্ষেতে কাজ করিয়া বাড়ি গেল, তার ভাত বাড়িয়া দিবার লোকের মনে ব্যস্ততা থাকিবেইত। দুপুরে নারীরা ঘাটে বেশি দেরি করে না। কিন্তু সকালে সন্ধ্যায় দেরি করে। পুরুষেরা এজন্য কিছু বলে না। তারা জানে এ নদী দিয়া কোনো সদাগরের নৌকার আসা-যাওয়া নাই।

শীতে বড় কষ্ট। গম গম করিয়া জলে নামিতে পারে না। জল খুব কম। সারা গা তো ডোবেই না, কোমর অবধিও ডোবে না। শীতের কন কনে ঠাণ্ডা জলে হুম করিয়া ডুবিয়া ভাসিয়া উঠিবার উপায় নাই; একটু একটু করিয়া শরীর ভিজে। মনে হয় একটু একটু করিয়া শরীরের মাংসের ভিতর ছুরি চালাইতেছে কেউ। চৈত্রের শেষে খরায় খাঁ খাঁ করে। এতদিন যে জলটুকু অবশিষ্ট ছিল, তাও একটু একটু করিয়া শুষিতে শুষিতে একদিন নিঃশেষ হইয়া যায়। ঘামের গা ধুইবার আর উপায় থাকে না। গরুরা জল খাইতে ভুল করিয়া আসিয়া ভাবনায় কাতর হয়। মাঘের মাঝামাঝি সরষে ফুলে আর কড়াই-মটরের সবুজিমায় দুই পারে নকসা করা ছিল। নদীতেও ছিল একটু জল। জেলেরা তিন-কোণা ঠেলা জাল ঠেলিয়া চাঁদা পুঁটি, টেংরা কিছু কিছু পাইত। কিন্তু চৈত্রের খরায় এ সবের কিছুই থাকে না। মনে হয় মাঘ মাসটা ছিল একটা স্বপ্ন। চারদিক ধূ-ধূ করা রুক্ষতায় কাতরায়। লোকে বিচলিত হয় না। জানে তারা এ সময় এমন হয়।

তিতাসের তেরো মাইল দূরের এমনি একটি নদী আছে। নাম বিজয়া নদী। তিতাসের পারের জেলেদের অনেক কুটুম বিজয় নদীর পারের পাড়াগুলিতে আছে। তিতাসের পারের ওরা ওই নদীর পারের কুটুম বাড়িতে অনেকবার বেড়াইতে গিয়াছে। বিয়ের কনের খোঁজে গিয়াছে। সে সব গাঁয়ে তারা দেখিয়াছে, চৈত্রের খরায় নদী কত নিষ্করুণ হয়। একদিক দিয়া জল শুখায় আর একদিক দিয়া মাছেরা দমবন্ধ হওয়ার আশঙ্কায় নাক জাগাইয়া হাঁপায়। মাছেদের মত জেলেদেরও তখন দম বন্ধ হইতে থাকে। সামনে মহাকালের শুষ্ক এক কঙ্কালের ছায়া দেখিয়া তারা এক সময় হতাশ হইয়া পড়ে। যারা বর্ষার সময় চাঁদপুরের বড় গাঙে নৌকা লইয়া প্রবাস বাহিতে গিয়াছিল, তারা সেখানে নিকারীর জিম্মায় নাও জাল রাখিয়া রেলে চড়িয়া আসিয়া পড়ে। তাদের

Scanned with CamScanner

কোন চিন্তা থাকে না। হাতের টাকা ভাঙিয়া এই দুর্দিন পার করে। কিন্তু যারা বর্ষায় ঘরের মায়া ছাড়িয়া বাহির হয় নাই তারাই পড়ে বিপদে। নদী ঠনঠনে। জাল ফেলিবে কোথায়। তিন-কোণা ঠেলা জাল কাঁধে ফেলিয়া আর এক কাঁধে গলা-চিপা ডোলা বাঁধিয়া এ-পাড়া সে-পাড়ায় টই-টই করিয়া ঘুরিতে থাকে, কোথায় পানা পুকুর আছে, মালিকহীন ছাড়া বাড়িতে। চার পাড়ে বন বাদাড়ের ঝুপড়ি। তারই ঝরাপাতা পড়িয়া, পচিয়া, ভারি হইয়া তলায় শায়িত আছে। তারই উপর দিয়া ভাসিয়া উঠিয়া ছোট মাছেরা ফুট দেয়। গলা-জল শুকাইয়া কোমর-জল, কোমল-জল শুকাইয়া হাঁটু-জল হইয়াছে। মাছেদের ভাবনার অন্ত নাই। কিন্তু অধিক ভাবিতে হয়না। গোপালকাছা দেওয়া দীর্ঘাকার মালো কাঁধের জাল নামাইয়া শ্যেন-দৃষ্টিতে তাকাইতে তাকাইতে এক সময় খেউ দিয়া তুলিয়া ফেলে। মাছেদের ভাবনা এখানেই শেষ হয়, কিন্তু মাছ যারা ধরিল তাদের ভাবনার আর শেষ হয় না। তাদের ভাবনা আরও সুদূরপ্রসারী। সামনে বর্ষাকাল পর্যন্ত।

বর্ষাকালের আর খুব বেশি দেরি নাই। সঙ্কট অবসানের সম্ভাবনায় অনেক মালো উদ্বেগের পাহাড় ঠেলিয়া চলিয়াছে, হাতে ঠেলা-জাল লইয়া চুনো পুঁটি যা পায় ধরিয়া পোয়া দেড়-পোয়া চাউলের যোগাড় করিতেছে। কিন্তু গৌরাঙ্গ মালোর দিন আর চলিতে চায় না। একদিন অনেক খানাডোবায় খেউ দিয়া কিছুই পাইল না, নামিলে টগবগ করিয়া পচা জলের ভুরভুরি উঠে, আর খেউ দিলে তিন-চারটা ব্যাঙ জাল হইতে লাফাইয়া এদিকে ওদিকে পড়িয়া যায়।

উঠানের একদিকে একটা ডালিম গাছ। পাতা শুখাইয়া গিয়াছে। গৌরাঙ্গ সুন্দরের বউ লাগাইয়াছিল। বউ যৌবন থাকিতেই শুখাইয়া গিয়াছিল। গাল বসিয়া, বুক দড়ির মত সরু হইয়া গিয়াছিল। বুকের স্তন দুটি বুকেই বসিয়া গিয়াছিল তার। তারপর একদিন সে মরিয়া গিয়াছিল। সে মরিয়া গিয়া গৌরাঙ্গকে বাঁচাইয়াছে। তার কথা গৌরাঙ্গসুন্দরের আর মনে পড়ে না। তারই মত শুখাইয়া যাওয়া তারই হাতের ডালিম গাছটায় চোখ পড়িতে আজ মনে পড়িয়া গেল। উঃ বউটা মরিয়া কি ভালই না করিয়াছে। থাকিলে, আজ তার অবস্থা হইত ঠিক নিত্যানন্দ দাদার মত।

নিত্যানন্দ থাকে উত্তরের ঘরে। তার বউ আছে। আর আছে একটি ছেলে, একটি মেয়ে। নিত্যানন্দ-পরিবারের দিকে চাহিয়া গৌরাঙ্গ শিহরিয়া উঠে! এক পেটের ভাবনা নিয়েই বাঁচি না, দাদা চারিটা পেটের ভাবনা মাথায় করিয়া কেমন তামাক খাইতেছে; তার যেন কোনো ভাবনা নাই।

সত্যি নিত্যানন্দর আর কোন ভাবনা নাই। যতই ভাবিয়াছে দেখিয়াছে কোন কূল-কিনারা পাওয়া যায় না। বউ ঝিমাইতেছে। ছেলেমেয়ে দুইটা নেতাইয়া পড়িয়া কিসের নির্ভরতা অক্ষম নিত্যানন্দর মুখের দিকে চাহিয়া আছে। আর নিত্যানন্দ কোন উপায় না দেখিয়া কেবল তামাক টানিতেছে।

পশ্চিমের ভিটায় গৌরাঙ্গসুন্দরের ঘর। ডালিম গাছে কাঁধের জাল ঠেকাইয়া দিয়া ডোলাটা ছুঁড়িয়া ফেলিল দাওয়ার একদিকে। দক্ষিণ ও পূর্বদিকের ভিটা খালি। তাদের দুই কাকা থাকিত। এক কাকা মরিয়া গিয়াছে এবং তার ঘর বেচিয়া তার শ্রাদ্ধ করিতে হইয়াছে। আরেক কাকা ঘর ভাঙ্গিয়া লইয়া আরেক গাঁয়ে ছাড়িয়া গিয়াছে।

গৌরাঙ্গ অকারণে খেঁকাইয়া উঠিল, 'খালি তামুক খাইলে পেট ভরব?'

'কি খামু তবে?'

না, 'চল যাই বোধাইর বাড়ি।' লোকটার কেবল পেটই শুখায় নাই। মাথাও শুখাইয়া গিয়াছে।

নয়ানপুরে বোধাই মালো টাকায় সব মালোদের চেয়ে বড়। বাড়িতে চার পাঁচটা ঢেউটিনের ঘর। দুই ছেলে রোজগারি লোক। বোধাই হাতির মত মোটা ও কাল। শরীরেও হাতির মত জোর। তার কারবার অন্য ধরনের। বড় বড় দীঘি ইজারা নিয়া মাছের পোনা ফেলে। মাছ বাড়িতে থাকে, আর তারা তিন বাপ বেটায় লোকজন লইয়া জাল ফেলে, মাছ তোলে, মাছ চালান দেয়। এ কাজে বোধাই অনেক লোকজন খাটায়। নদীতে জল না থাকিলে, মালোরা যখন দুই চোখে অন্ধকার দেখে তখন তারা যায় বোধাইর বাড়িতে।

কিন্তু তিতাসের কত জল! কত স্রোত! কত নৌকা! সবদিক দিয়াই সে অকৃপণ।

আর বিজয় নদীর তীরে তীরে যে মালোরা ঘর বাঁধিয়া আছে, তাদের কত কষ্ট। নদী শুখাইয়া গেলে তাদের নৌকাগুলি অচল হইয়া থাকে আর কাঠ-ফাটা রোদে কেবল ফাটে।

তিতাস তীরের মালোরা যারা সেখানে বেড়াইতে গিয়াছে চৈত্রের খরায় নদী কত নিষ্করুণ হয় দেখিয়া আসিয়াছে। রিক্ত মাঠের বুকে ঘূর্ণির বুভুক্ষা দেখিতে দেখিতে ফিরত-পথে তারা অনেকবার ভাবিয়াছে, তিতাস যদি কোনদিন এই রকম করিয়া শুখাইয়া যায়। ভাবিয়াছে এর আগেই হয়ত তাদের বুক শুখাইয়া যাইবে। ভাবিতে ভাবিতে হঠাৎ পাশের জনকে নিতান্ত খাপছাড়াভাবে বলিয়াছে : 'বিজনার পারের মালো গুষ্টি বড় অভাগা রে ভাই বড় অভাগা।'

যারা বিজয় নদীর দশা দেখে নাই, বছরের পর বছর কেবল তিতাসের তীরেই বাস করিয়াছে, তারা এমন করিয়া ভাবে না. তারা ভাবে তিন-কোণা ঠেলা-জাল আবার একটা জাল। তারে হাঁটু জলে ঠেলিতে হয়, ওঠে চিংড়ির বাচ্চা। হাত তিনেক তো মোটে লম্বা। বিজয়ের বুকে তা-ই ডোবে না। তিতাসের জলে কত বড় বড় জাল ফেলিয়া তারা কত রকমের মাছ ধরে। এখানে যদি তিতাস নদী না থাকিত, বিজয় নদী থাকিত, তবে নাকের চারিদিক থেকে বায়ুটুকু সরাইয়া রাখিলে যা অবস্থা হয়, তাদের ঠিক সেইরকম অবস্থা হইত। ওদের মতো ঠেলা-জাল ঘাড়ে করিয়া গ্রাম-গ্রামান্তরের খানা-ডোবা খুঁজিয়া মরিতে হইত দুই আনা আর দশ পয়সার মোরলা ধরিবার জন্য।

জেলেদের বৌ-ঝিরা ভাবে অন্যরকম কথা—বড় নদীর কথা যারা শুনিয়াছে। যেসব নদীর নামে মেঘনা আর পদ্মা। কি ভীষণ! পাড় ভাঙ্গে। নৌকা ডোবায়। কি ঢেউ। কি গহীন জল। চোখে না দেখিয়াই বুক কাঁপে! কত কুমীর আছে সেসব নদীতে। তাদের

Scanned with CamScanner

পুরুষদের মাছ ধরার জীবন। রাতে-বেরাতে তারা জলের উপরে থাকে। এতবড় নদীতে তারা বাহির হইত কি করিয়া! তাদের নদীতে পাঠাইয়া মেয়েরা ঘরে থাকিতই বা কেমন করিয়া। তিতাস কত শান্ত। তিতাসের বুকে ঝড়-তুফানের রাতেও স্বামী-পুত্রদের পাঠাইয়া ভয় করে না। বউরা মনে করে স্বামীরা তাদের বাহুর বাঁধনেই আছে, মায়েরা ভাবে ছেলেরা ঠিক মায়েরই বুকে মাথা এলাইয়া দিয়া শান্তমনে মাছ-ভরা জাল গুটাইতেছে।

বাংলার বুকে জটার মতো নদীর প্যাঁচ। সাদা, ঢেউ-তোলা জটা। কোন মহাস্থবিরের চুম্বন-রস-সিক্ত বাংলা। তার জটাগুলি তার বুকের তারুণ্যের উপর দিয়া সাপ খেলানো জটিলতা জাগাইয়া নিম্নাঙ্গের দিকে সরিয়া পড়িয়াছে। এ সবই নদী।

সবগুলি নদীর রূপ এক নয়। উহাদের ব্যবহার এবং উহাদের সহিত ব্যবহার তাও বিভিন্ন রকমের। সবগুলি নদীই মানুষের প্রাত্যহিক জীবনের কাজে আসে। কিন্তু এ কাজে আসার নানা ব্যতিক্রম আছে। বড় নদীতে সওদাগরের নৌকা আসে পাল উড়াইয়া। উহার বিশাল বুকে জেলেরা সারাদিন নৌকা লইয়া ভাসিয়া থাকে। নৌকায় রাঁধে, খায়, ঘুমাইয়া থাকে। মাছ ধরে। সব বিষয়ে একটা কঠোর রূপ এখানে প্রকটিত। তীরে তীরে বালুচর, তাল নারিকেল সুপারির বাগ। স্রোতের খরায় তীরের মাটি কাটে, ধ্বসে। ঢেউয়ের আঘাতে তীরগুলি ভাঙ্গিয়া খসিয়া পড়ে। গৃহস্থালি ভাঙ্গে। খেত-খামার ভাঙ্গে, তাল-নারিকেল, সুপারির গাছগুলি সারি বাঁধিয়া ভাঙ্গিয়া পড়ে। ক্ষমা নাই! ভাঙ্গাগড়ার এক রুদ্রলোকের দোলনায়—করাল চিত্তচঞ্চল ক্ষিপ্ত আনন্দ...সেই এক ধরনের শিল্প।

শিল্পের আর একটা দিক আছে। সৌম্যশান্তকরণ স্নিগ্ধ প্রসাদ গুণের মাধুর্যে রঞ্জিত এ শিল্প। এ শিল্পের শিল্পী মহাকালের তাণ্ডব নৃত্য আঁকিতে পারে না। পিঙ্গল জটার বাঁধন খসিয়া পড়ার প্রচণ্ডতা এ শিল্পীর তুলিকায় ধরা দিবে না। এ শিল্পের শিল্পী মেঘনা, পদ্মা, ধলেশ্বরীর তীর ছাড়িয়া তিতাসের তীরে আঙিনা রচনা করিয়াছে।

এ শিল্পী যে ছবি আঁকে তা বড়ো মনোরম। তীর-ঘেঁষিয়া সব ছোট ছোট পল্লী। তারপর জমি। তাতে অঘ্রাণ মাসে পাকা ধানের মৌসুম। মাঘ মাসে সর্ষে ফুলের অজস্র হাসি। তারপর পল্লী। ঘাটের পর ঘাট। সে ঘাটে জীবন্ত ছবি। মা তার নাদুস-নুদুস ছেলেকে ডুবাইয়া চুবাইয়া তোলে। বৌ-ঝিরা সব কলসী লইয়া ডুব দেয়। পরক্ষণে ভাসিয়া উঠে। অল্প দূর দিয়া নৌকা যায়, একের পর এক। কোনটাতে ছই থাকে, কোনটাতে থাকে না। কোন কোন সময় ছইয়ের ভিতর নয়া বউ থাকে। বাপের বাড়ি থেকে স্বামী তার বাড়িতে লইয়া যায়; তখন ছইয়ের এ-পারে ও-পারে থাকে বউয়েরই শাড়ি-কাপড়ের বেড়া। স্বামীর বাড়ি থেকে যখন বাপের বাড়ি যায়, তখন কিন্তু কাপড়ের বেড়া থাকে না। থাকে না তার মাথায় ঘোমটা। ছইয়ের বাহিরে বসিয়া ঘাটগুলির দিকে চাহিয়া থাকে সে। স্বামীর বাড়ির ঘাট অদৃশ্য না হইলে কিন্তু সে ছইয়ের বাহিরে আসে না।

তারা স্বামীর বাড়ি থেকে বাপের বাড়ি আর বাপের বাড়ি থেকে স্বামীর বাড়ি যায় অনেক হাসি-কান্নার ঢেউ বুকে লইয়া। যে বউ স্বামীর বাড়ি যায়, তার এক চোখে প্রজাপতি নাচে, আরেক চোখে থাকে জল। এরা সব ভিন্ন্ জাতের বউ। বামুন, কায়েত, নানা জাতের। জেলেদের বউরা জেলে-নৌকাতেই যায়। তারা অত সুন্দরীও নয়। অত তাদের আবরুরও দরকার হয় না। কিন্তু ওরা খুব সুন্দরী। জেলের ছেলেরা কপালের দোষ দেয়। অমন সুন্দর বউ তাদের জীবনে কোনদিন আসিবে না। ভালো করিয়া চায় তারা। ভালো করিয়া চাইতে পারিলে প্রায়ই ছইয়ের ফাঁক দিয়া বাতাসে শাড়ি একটু সরিয়া গেলে, চকিতে তারই ফাঁক দিয়া, টুকটুকে একখানা মুখ আর এক জোড়া চোখ চোখে পড়িবে। বউয়ের অভিভাবক ছইয়ের দুই মুখে গুঁজিয়া দিয়াছে শাড়ির বেড়া; তাতে বউকে সকলে দেখিতে পারে না, কিন্তু বউ সকলকে দেখিতে পায়। তিতাসের জলে অনেক মাছ। মালোর স্ফূর্তি রসাইয়া ওঠে। জালের দিকে চোখ রাখিয়াই গাহিয়া ওঠে, 'আগে ছিলাম ব্রাহ্মণের মাইয়া করতাম শিবের পূজা, জানুয়ার সনে কইরা প্রেম কাটি শণের সুতা রে নছিবে এই ছিল।' বউ ঠিক শুনিতে পাইবে।

গ্রামের পর খাল। নৌকাখানা সেখানে ঢুকিয়া পড়ে। সাপের জিহ্বার মত চকিতে সে খাল গ্রামখানাকে ঘুরিয়া কোথায় পলাইয়া গিয়াছে। হয়ত আরো দূরে গিয়াছে। আরো কয়েকখানি গ্রামের পাশ দিয়া জের টানিতে টানিতে গিয়া, তারই কোনটাতে বউকে লইয়া যাইবে। খালের পাড়েই বাড়ি। ছোট্ট ছেলে-পিলেরা তৈরি হইয়া আছে, বউকে কি করিয়া চমকাইয়া দিবে। তৈরি হইয়া আছে হয়ত আরও কেউ। খালটা এইখানে শুখাইয়া গিয়াছে। এইখানে নৌকা হইতে উঠিয়া বউকে খানিকটা হাঁটিয়া যাইতে হইবে। শিল্পী শান্ত সবুজ সুন্দর রঙে ক্ষেতগুলির বুকে বুকে যে নক্সা আঁকিয়া রাখিয়াছে তাহারই আল দিয়া বউকে হাঁটিতে হইবে। তিতাসের তীরে না থাকার কি কষ্ট। যে-বউয়ের যাওয়ার বাড়ি একেবারে তিতাসের তীরে, কর্ম-চঞ্চল ঘাটখানাতে তার নৌকা লাগে। দশজোড়া নারীর চোখের দরদে স্নান করিয়া সে বউ নৌকা থেকে নামে। তারপর বাপের বাড়ি হইলে এক দৌড়ে ঘরে ঢুকিয়া ছোট ছোট ভাইবোনদের বুকে চাপিয়া ধরে। আর স্বামীর বাড়ি হইলে পিঠের কাপড়সুদ্ধ টানিয়া তুলিয়া ঘোমটা বড় করে, তারপর আগে-পিছে দুই-চারিজন নারীর মাঝখানে থাকিয়া ধীরে ধীরে জড়িত পায়ে ঘাটের পথটুকু অতিক্রম করে।

পথটুকু অতিক্রম করিয়া জমিলা বাহির-বাড়ির মসজিদ-লগ্নমকবের কোণে পা দিয়া একবার পিছন ফিরিয়া চাহিল। তার স্বামী মাঝির সঙ্গে তখনও কেরায়া নিয়া দরদস্তুর করিতেছে। দুই-এক আনা ফেলিয়া দিলেই মাঝি খুশি হইয়া চলিয়া যায়। বুড়ো মাঝি যা খাটিয়াছে! সঙ্গে মাত্র দুই ননদ; তাও ননদের ছোট সংস্করণ! সন্ধ্যা ঘনাইয়া আসিয়াছে। ভয় করে না বুঝি! লোকটা যেন কি! তাদের আসিতে বলিয়া নিজে আসিতেছে না। বাড়ির পথে বড় বড় ঘাস। সাপ বাহির হইয়াছে হয়ত। ব্যাঙ মনে করিয়া এখনই জমিলার পায়ের বুড়ো আঙুলে যদি ছোবল দেয়!

ছমির মিয়া হিসাবী লোক। কাউকে এক পয়সা ঠকায় না। বেহুদা কাউকে এক পয়সা বেশিও দেয় না। সব কাজ ওজন

Scanned with CamScanner

করিয়া করে। মাঝি হার মানিয়া নৌকায় গিয়া উঠিলে, ছমিরের মনে অনাহূত এক ছোপ প্রসন্নতা রং গুলাইয়া দিল। আজ তার কিসের রাত! এ রাতে কেউ কোনদিন মাঝিকে ঠকায়। কেউ যেন না ঠকায়।

মাঝি দশ মিনিট ঝগড়া করিয়া যাহা পায় নাই, এক মিনিট চুপ করিয়া তাহার চারগুণ পাইল। চকচকে সিকিটা সাদা নদীর খোলসা অল্প-আলোকে ভাল করিয়া দেখিয়া লইয়া লগিতে ঠেলা দিল।

ছমির কাছে আসিলে জমিলার মনে হইল—এতক্ষণ এতগুলি সাপ তার পায়ের বুড়ো আঙ্গুলটিকে ঘিরিয়া কিল্‌বিল্ করিতেছিল, এখন সব কয়টা সরিয়া পড়িয়াছে। কি ভাল তার মানুষটি!

কিন্তু তার চাইতেও ভাল একজনকে সে দেখিয়া আসিয়াছে। সেই মালোপাড়ার ঘাটে। বড় ভাল লাগিয়াছে তার মানুষটাকে। প্রথম দৃষ্টিতেই সে তাকে ভালবাসিয়া ফেলিয়াছে, সেও কি তেমনি ভালবাসে নাই? কেমন অনুরাগের ভরে চাহিয়াছিল। আর কেমন মানুষ গো! একবার দেখিয়াই মনে হইল যেন কতবার দেখিয়াছি। বেলা ফুরাইতেছে! একটু একটু বাতাস বহিতেছে। আর সেই বাতাসে আমার শাড়ির বেড়া খুলিয়া গেল, আর তখনই তাকে আমি দেখিতে পাইলাম। যদি না খুলিত, তবে তা দেখিতেই পাইতাম না। এমনি কত লোককে যে আমরা দেখিতে পাই না। অথচ দেখিতে পাইলে এমনি করিয়া আপন হইয়া যাইত! আমরা কি আর দেখি? যে দেখাইবার, সেই দেখায়! তা না হইলে সে যখন জলে ঢেউ খেলাইয়া কলসী ডুবাইল, ঠিক সেই সময়ে আমার শাড়ির বাঁধন খুলিল কেন? বর্ষায় আমার বাপ ওদের গাঁয়ে ভিজা নলিতার আঁটি-বোঝাই নৌকা লইয়া যায়, পাট ছাড়াইবার জন্য। আবার যখন বাপের বাড়ি যাইব, বাপকে বলিয়া রাখিব এই রকম এই রকম মেয়েটি দেখিতে ঠিক আমার মত; তার বাপকে বলিয়া দেখিও, আমার মেয়ে তোমার মেয়ের সঙ্গে সই পাতিতে চায়, তুমি রাজি আছ কিনা।

আগে যা বলিতেছিলাম।

—এ শিল্পী মহাকালের তাণ্ডব-নৃত্য আঁকিতে পারে না। পিঙ্গল জটার বাঁধন খসিয়া পড়ার প্রচণ্ডতা এ শিল্পীর তুলিকায় ধরা দিবে না। এ শিল্পী মেঘনা-পদ্মা-ধলেশ্বরীর তীর ছাড়িয়া তিতাসের তীর আঙিনা রচনা করে।

এ শিল্পী যে ছবি আঁকে তা বড় মনোরম। তীর ঘেঁষিয়া সব ছোট ছোট গ্রাম। গ্রামের পর জমি। অগ্রহায়ণে পাকা ধানের মৌসুম। আর মাঘে সর্ষেফুলের হাসি। তারপর আবার গ্রাম। লতাপাতা গাছগাছলির ছায়ায় ঢাকা সবুজ গ্রাম। ঘাটের পর ঘাট। সে ঘাটে সব জীবন্ত ছবি। মা তার নাদুস-নুদুস শিশু ছেলেমেয়েকে চুবাইয়া তোলে। আর বৌ-ঝিয়েরা কলসী লইয়া ডুব দেয়। অল্প একটু দূর দিয়া নৌকা যায় একের পর এক।...

তিতাস একটি নদীর নাম। এ নামের ব্যুৎপত্তিগত অর্থ তার তীরের লোকেরা জানে না। জানিবার চেষ্টা কোনদিন করে নাই, প্রয়োজন বোধও করে নাই। নদীর কত ভাল নাম থাকে—মধুমতী, ব্রহ্মপুত্র, পদ্মা, সরস্বতী, যমুনা। আর এর নাম তিতাস। সে কথার মানে কোনোদিন অভিধানে খুঁজিয়া পাওয়া যাইবে না। কিন্তু নদী এ নামে যত প্রিয়, ভালো একটা নাম থাকিলে তত প্রিয় হইতই যে, তার প্রমাণ কোথায়।

ভাল নাম আসলে কি? কয়েকটা অক্ষরের সমষ্টি বৈ ত নয়। কাজললতা মেয়েটিকে বৈদুর্যমালিনী নাম দিলে, আর যাই হোক, এর খেলার সাথীরা খুশি হইবে না। তিতাসের সঙ্গে নিত্য যাদের দেখাশোনা, কোনো রাজার বিধান যদি এর নাম চম্পকবতী কি অলকানন্দা রাখিয়া দিয়া যায়, তারা ঘরোয়া আলাপে তাকে সেই নামে ডাকিবে না, ডাকিবে তিতাস নামে।

নামটি তাদের কাছে বড় মিঠা। তাকে তারা প্রাণ দিয়া ভালবাসে, তাই এই নামের মালা তাদের গলায় ঝুলানো।

শুরুতে কে এই নাম রাখিয়াছিল, তারা তা জানে না। তার নাম কেউ কোনদিন রাখিয়াছে, এও তারা ভাবে না। ভাবিতে বা জানিতেও চায় না। এ কোনদিন ছিল না, এও তারা কল্পনা করিতে পারে না। কবে কোন দূরতম অতীতে এর পারে তাদের বাপ পিতামহেরা ঘর বাঁধিয়াছিল একথা ভাবা যায় না। এ যেন চির সত্য, চির অস্তিত্ব নিয়া এখানে বহিয়া চলিয়াছে। এ সঙ্গী তাদের চিরকালের। এ না হইলে তাদের চলে না। এ যদি না হইত, তাদের চলিতও না। এ না থাকিলে তাদের চলিতে পারে না। জীবনের প্রতি কাজে এ আসিয়া উঁকি মারে। নিত্যদিনের ঝামেলার সহিত এর চিরমিশ্রণ।

নদীর একটা দার্শনিক রূপ আছে। নদী বহিয়া চলে। কালও বহিয়া চলে। কালের বহার শেষ নাই। নদীরও বহার শেষ নাই। কতকাল ধরিয়া কাল নিরবচ্ছিন্ন ভাবে বহিয়াছে। তার বুকে কত ঘটনা ঘটিয়াছে। কত মানুষ মরিয়াছে। কত মানুষ বিশ্রীভাবে মরিয়াছে—কত মানুষ না খাইয়া মরিয়াছে—কত মানুষ ইচ্ছা করিয়া মরিয়াছে—আর কত মানুষ মানুষের দুষ্কার্যের দরুন মরিতে বাধ্য হইয়াছে। আবার শত মরণকে উপেক্ষা করিয়া কত মানুষ জন্মিয়াছে। তিতাসও কতকাল ধরিয়া বহিয়া চলিয়াছে। তার চলার মধ্যে তার তীরে তীরে কত মরণের কত কান্নার রোল উঠিয়াছে। কত অশ্রু আসিয়া তার জলের স্রোতে মিশিয়া গিয়াছে। কত বুকের কত আগুন, কত চাপা বাতাস তার জলে মিশিয়াছে। কতকাল ধরিয়া এ সব সে নীরবে দেখিয়াছে, দেখিয়াছে আর বহিয়াছে। আবার সে দেখিয়াছে কত শিশুর জন্ম, দেখিয়াছে আর ভাবিয়াছে। ভাবী নিগ্রহের নিগড়ে আবদ্ধ এই অজ্ঞ শিশুগুলি জানে না, হাসির নামে কত বিষাদ, সুখের নামে কত ব্যথা, মধুর নামে কত বিষ তাদের জন্য অপেক্ষা করিয়া আছে।

ওরা কারা? ওরা মালোদের ছেলেরা। আর মালোদের মেয়েরা। ওরা তারা নয় যাদের দেয়াল-ঘেরা বাড়ি, সামনে আছে পুষ্করিণী, পাশে আছে কুয়া, যাদের আঙিনার পার থেকেই শুরু হইয়াছে পথ—সে পথ গিয়াছে শহরের দিকে, পাশের গাঁগুলিতে এক একটা শাখা পথ ঢুকাইয়া দিয়া। সে পথে ঘোড়ার গাড়ি চলে।

আর মালোদের ঘরের আঙিনা থেকে শুরু হইয়াছে যে পথ সে সবই গিয়া মিশিয়াছে তিতাসের জলে। সে-সব পথ ছোট ছোট। পথের এধার থেকে বুকের শিশু কাঁদিয়া উঠিলে ওধার থেকে মা টের পায়। এধারের তরুণীর বুকের ধুকধুকানি ওধারের

Scanned with CamScanner

নৌকার মাচানে বসিয়া মালোদের তরুণরা শুনিতে পায়। এ-পথ অতি খর্ব। দীর্ঘ পথ গিয়াছে মাঝ-তিতাসের বুক চিরিয়া। সে পথে চলে কেবল নৌকা।

তিতাস সাধারণ একটি নদী মাত্র। কোন ইতিহাসের কেতাবে, কোন রাষ্ট্র বিপ্লবের ধারাবাহিক বিবরণীতে এ নদীর নাম কেউ খুঁজিয়া পাইবে না। কেননা, তার বুকে যুযুধান দুই দলের বুকের শোণিত মিশিয়া ইহাকে কলঙ্কিত করে নাই। কিন্তু তাই বলিয়া তার কি সত্যি কোনো ইতিহাস নাই?

পুঁথির পাতা পড়িয়া গর্বে ফুলিবার উপাদান এর ইতিহাসে নাই সত্য, কিন্তু মায়ের স্নেহ, ভাইয়ের প্রেম, বৌ-ঝিয়ের দরদের অনেক ইতিহাস এর তীরে তীরে আঁকা রহিয়াছে। সেই ইতিহাস হয়ত কেউ জানে, হয়ত কেউ জানে না। তবু সে ইতিহাস সত্য। এর পারে পারে খাঁটি রক্তমাংসের মানুষের মানবিকতা আর অমানুষিকতার অনেক চিত্র আঁকা হইয়াছে। হয়ত সেগুলি মুছিয়া গিয়াছে। হয়ত তিতাসই সেগুলি মুছিয়া নিয়াছে! কিন্তু মুছিয়া নিয়া সবই নিজের বুকের ভিতর লুকাইয়া রাখিয়াছে। হয়ত কোনোদিন কাহাকেও সেগুলি দেখাইবে না, জানাইবে না। কারো সেগুলি জানিবার প্রয়োজনও হইবে না। তবু সেগুলি আছে। যে-আখর কলার পাতায় বা কাগজের পিঠে লিখিয়া অভ্যাস করা যায় না, সে-আখরে সে সব কথা লেখা হইয়া আছে। সেগুলি অঙ্গদের মত অমর। কিন্তু সত্যের মত গোপন হইয়াও বাতাসের মতো স্পর্শপ্রবণ। কে বলে তিতাসের তীরে ইতিহাস নাই।

আর সত্য তিতাস-তীরের লোকেরা! তারা শীতের রাতে কতক কতক কাঁথার তলাতে ঘুমায়। কতক জলের উপর কাঠের নৌকায় ভাসে। মায়েরা, বোনেরা আর ভাই-বউয়েরা তাদের কাঁথার তলা থেকে জাগাইয়া দেয়। তারা এক ছুটে আসে তিতাসের তীরে। দেখে, ফরসা হইয়াছে; তবে রোদ আসিতে আরও দেরি আছে। নিস্তরঙ্গ স্বচ্ছ জলের উপর মাঘের মৃদু বাতাস ঢেউ তুলিতে পারে না। জলের উপরিভাগে বাষ্প ভাসে—দেখা যায়, বুঝি অনেক ধোঁয়া। তারা সে ধোঁয়ার নিচে হাত ডোবায়, পা ডোবায়। অত শীতেও তার জল একটু উষ্ণ মনে হয়। কাঁথার নিচের মায়ের বুকের উষ্ণতার দোসর এই মৃদু উষ্ণতাটুকু না পাইলে তারা যে কি করিত।

শরতে আকাশের মেঘগুলিতে জল থাকে না। কিন্তু তিতাসের বুকে থাকে ভরা জল। তার তীরের ডুবো মাঠময়দানে সাপলা-শালুকের ফুল নিয়া, লম্বা লতানে ঘাস নিয়া, আর বাড়ন্ত বর্ষাল ধান নিয়া থাকে অনেক জল। ধানগাছ আর সাপলা-শালুকের লতাগুলির অনেক রহস্য নিবিড় করিয়া রাখিয়া এ জল আরও কিছুকাল স্তব্ধ হইয়া থাকে। তারপর শরৎ শেষ হইয়া আসে। কে বুঝি বৃহৎ চুমুকে জল শুষিতে থাকে। বাড়তি জল শুখাইয়া গিয়া তিতাস তার স্বাভাবিক রূপ পায়। যে-মাটি একদিন অথৈ জলের নিচে থাকিয়া মাখনের মত নরম হইয়া গিয়াছিল, সে মাটি আবার কঠিন হয়। আসে হেমন্ত।

হেমন্তের মুমূর্ষু অবস্থায় কখন ধানকাটার মৌসুম শুরু হইয়া গিয়াছিল। পাড়ে সব খানেই গ্রাম নাই। এক গ্রাম ছাড়াইয়া আরেক গ্রামে যাইতে মাঝে পড়ে অনেক ধানজমি। জমির চাষীরা ধানকাটা শেষ করিয়া ভারে ভারে ধান এদিক ওদিকের গ্রামগুলিতে বহিয়া নিয়া চলে। তারা তিতাসের ঠিক পাড়ে থাকে না। থাকে একটু দূরে। একটু ভিতরের দিকে। সেখান হইতে মাঘের গোড়ায় আবার তারা তীরে তীরে সর্ষে বেগুনের চারা লাগায়। তীরের যেখানে যেখানে বালিমাটির চর, সেখানে তারা আলুর চাষ করে। এ মাটিতে সকরকন্দ আলু ফলায় অজস্র।

জোবেদ মালীর জোয়ান ছেলেরা ওপারে আলু লাগাইয়া তিন ভাইয়ে এক-সমানে আলী আলী বলিয়া তাদের লম্বা ডিঙ্গিখানা ভাসাইয়া তাতে উঠিয়া পড়িল। বেলা পড়িয়া আসিয়াছে। হালের চারিজোড়া বলদ ও দুইজোড়া ষাঁড় পার করাইতে হইবে; সে কাজ করিবে তাদের মুনীস-দুইজন। সারা বছর তারা জোবেদ আলীর বাড়িতে জন খাটে। খায় দায়, মাহিনা পায়। সারাদিন—ভোর হইতে রাত-অবধি খাটে, রাতের খানিকটা সময় গিয়া নিজেদের বাড়িতে পরিবারের সান্নিধ্য লাভ করিয়া আসে। দিনমানে আর দেখা হয় না। পরিবারেরাও এর বাড়ি ওর বাড়ি ধান ভানিয়া পাট গুটাইয়া কিছু কিঞ্চিৎ উপায় করে। এইভাবে দিন গুজরায় তারা। কাজেই জোবেদ আলীর ছেলেরা যখন আলী আলী বলিয়া নৌকায় নদী পার হইতে থাকে, মুনীস-দুইজন তখন চারিজোড়া বলদ ও দুইজোড়া ষাঁড়ের অনিচ্ছুক দেহমন শীতের জলে নামাইয়া মাথায় পাগড়ি বাঁধিয়া গরুদের ল্যাজে ধরিয়া আল্লা আল্লা মোমিন বলিয়া সাঁতার দেয়। সকালে এপার হইতে ওপার যাইবার বেলা লাঙ্গল কাঁধে করিয়া সর্ষে ক্ষেতগুলির আলের উপর দিয়া গিয়াছে! তীর-অবধি সর্ষে ফুলের হলদে জৌলুষে হাসিয়া উঠিয়াছিল। মনে হইয়াছিল কে বুঝি তিতাসের কাঁধে নক্সা-করা উড়ানি পরাইয়া রাখিয়াছে। অর্বাচীন গরুগুলি পাছে তাতে মুখ দেয়, তার জন্য কত না ছিল সতর্কতা। এখন এ-পারে উঠিয়া গায়ের জল মুছিতে মুছিতে চারিদিকে আঁধার হইয়া আসে। আঁধারে সব একাকার, গরু কোথায় মুখ দিবে। দিনের শ্রমে শ্রান্ত গরু। আর শ্রান্ত এ দুইজন মানুষ। সারাদিন অসুরের বল নিয়া ক্ষেতে খাটিয়াছে। এবার বাড়িতে যাইবে। তাই এত ব্যস্ততা। কিন্তু কার বাড়িতে যাইবে। তাদের প্রভু জোবেদ আলীর বাড়িতে। নিজের বাড়িতে নয়। পাখিরাও এ সময় নিজের বাসায় যায়। তারা যাইবে মুনিবের বাড়িতে। গিয়া গোয়ালে গরু বাঁধিবে। ঘাস কাটিবে। মাড় দিবে, খইল ভূষি দিবে। জোতদার চাষীর বাড়িতে কত কাজ। এটা সেটা টুকিটাকি কাজ করিতে করিতে হাজার গণ্ডা কাজ হইয়া যায়। প্রকাণ্ড চওড়া উঠান। চার ভিটায় বড় বড় চারিটা ঘর। বাহিরের দিকে গোয়ালসুদ্ধ আরো তিন-চারিটা ঘর। দড়ি পাকানো হইতে বেড়া বাঁধা পর্যন্ত এই এতবড় বাড়িতে কত কাজ যে এই দুইজনের জন্য অপেক্ষা করিয়া থাকে। কাজ করিতে করিতে রাত বাড়িয়া চলে। এক সময় ডাক আসে—'অ করমালী, 'অ বন্দালী খাইয়া যাও।'

খাওয়ার পর কাঁধের গামছায় মুখ মুছিতে মুছিতে পথে নামিয়া বন্দেআলী বলে, 'ভাই করমালী নিজে ত খাইলাম ঝাগুর মাছের ঝোল। আমার ঘরের মানুষের একমুঠ শাক-ভাত আজ জুটল নি, কি জানি?'

Scanned with CamScanner

করমালী বলে, 'বন্দালী ভাই, কইছ কথা মিছা না। তোমার আমার ঘরের মানুষ! তোমার আমার ঘরই নাই, তার আবার মানুষ। দয়া কইরা রাইতে থাকতে দেয়—থাকি; ফজরে উইঠ্যা মুনিবের বাড়ি গিয়া ঘুমের আলস ভাঙ্গি। ঘরের সাথে এইত সমন্দ।—কি খায়, কি পিন্ধে কোনোদিন নি খোঁজ রাখতে পারছি? তা যখন পারছি না তখন তোমার আমার কিসের ঘর আর কিসের মানুষ।'

বন্দেআলী খানিক ভাবিয়া নিয়া বলে, 'বেবাকই বুঝি করমালী ভাই। তবু মুনিবের ঘরে পঞ্চ সামগ্রী দিয়া খাইবার সময় ঘরের কথা মনে হয়; গলায় ভাত আইটকা যায়, আর খাইতে পারি না।'

শুনিয়া করমালী বলে, 'আমার কিন্তু তাও মনে পড়ে না। হ, আগে মাঝে মাঝে পড়ত। এখন দেখি, পড়ে না যেইটাই ভাল।'

একটা দীর্ঘনিঃশ্বাস ছাড়িয়া বন্দেআলী বলে, 'সারাদিনের মেহনতে নাস্তানাবুদ হইয়া ঘরে যাই, গিয়া দেখি ছিঁড়া চাটাইয়ে শুইয়া আছে। ঝুপ কইরা তার পাশে শুইয়া পড়ি; জাগাই না।—একদিন তার একখানা হাত আইয়া আমার বুকের উপর পইড়া যায়। হাতখানা হাতে লইয়া দেখি, কি শক্ত! কড়া পড়ছে, পরের বাড়ির ধান ভানতে ভানতে।'

করমালীর বউ ধান ভানে না। লোকের বাড়ি বাড়ি কাঁথা সেলাই করিয়া দেয়। কাঁথা সেলাইয়ের ধুম পড়িয়াছে। তার মোটে অবসর নাই। ডান হাতের সূঁচের ফোঁড় বাঁ হাতের আঙ্গুলের ডগায় তুলিতে তুলিতে আঙ্গুলে হাজার কাটাকাটি দাগ পড়িয়াছে। করমালী প্রায়ই ঘরে গিয়া দেখে বিছানা খালি।

একটু বিমর্ষ হাসি হাসিয়া করমালী বলিল : 'বন্দালী ভাই, তুমিত গিয়া দেখ, বউ ঘুমাইয়া রইছে। আমি ছিঁড়া কাঁথায় গাও এলাইয়া দিয়া পথের পানে চাইয়া থাকি। সে তখন পরের বাড়ির কাঁথা সিলাই করে, আর সে সূঁইচের ফোঁড় আমার বুকে আইয়া বিধে! তার আইতে আইতে রাইত্ গহীন হয়—আগ-আন্ধাইরা রাইত—দেখি আন্ধাইর দিয়া চাঁদ উঠছে—ভাঙা বেড়ার ফাঁকে দিয়া রোশনি ঢুকে, কেডায় যেমুন ফক ফক কইরা হাসে।'

কথা শেষ হইলেও করমালীর মুখের ম্লান হাসিটুকু মিলাইয়া যায় না। বন্দেআলীর বুক ছাপাইয়া আর একটা দীর্ঘনিঃশ্বাস বাহির হয়। কোনোরকমে সেটা চাপা দিতে দিতে বলে, 'করমালী ভাই, আছ ভাল। কামে কাজে থাক, খাও দাও। তার কথা মনে পড়ে না। মনে পড়ে খালি শুইবার সময়। আমার হইছে বিষম জ্বালা! উঠতে বইতে খালি মনে হয় তারে আমি দুখ দিতাছি। একটু সুখ না, শান্তি না—আমরা কি অভাগ্যা ভাই করমালী।'

করমালী প্রায় দার্শনিক নির্লিপ্ততার সঙ্গে বলিল, 'আমার ভাই অত কথায় কথায় শ্বাস পড়ে না। তুমি আমি বড় মুনিবের কাম করি, ভাল খাই। বউরা ছোট মুনিবের কাম করে, ভাল খাইতে পারে না।—আমরার জমি নাই, জিরাত নাই পরের জমি চইয়া জারকাবার করি। যদি জমি থাকত তা অইলে বউরা নিজেরার ঘরে খাটত, তোমারে আমারে মুনিবের মত দেখত।'

বন্দেআলীর মন এই ধরনের চিন্তায় সায় দেয় না। সে ভাবে করমালীর প্রেমিক মন বড় নিষ্ঠাহীন; তার মতে স্ত্রীর প্রতি প্রেম ভালবাসা এসবের বুঝি কোন দাম নাই। হ্যাঁদাম নাই-ই তো। তার মতো ভূমিহীন চাষীর কাছে এসবের কোন দাম নাই। জীবনে যদি বসন্ত আসে তবেই এসবের দাম চোখে ধরা পড়ে। তাদের জীবনে বসন্ত আসে কই।

আসে বসন্ত। এই সময় মাঠের উপর রঙ থাকে না। তিতাসের তীর ছুঁইয়া যাদের বাড়িঘর তারা জেলে। তিতাসে মাছ ধরিয়া তারা বেচে, খায়। তাঁদের বাড়ি পিছু একটা করিয়া নৌকা ঘাটে বাঁধা থাকে। বসন্ত তাদের মনে রঙের মাতন জাগায়।

বসন্ত এমনি ঋতু—এই সময় বুঝি সকলের মনে প্রেম জাগে। জাগে রঙের নেশা। জেলেরা নিজে রঙ মাখিয়া সাজে—তাতেই তৃপ্তি পায় না। যাদের তারা প্রিয় বলিয়া মনে করে তাদেরও সাজাইতে চায়। তাতেও তৃপ্তি নাই। যাদের প্রিয় বলিয়া মনে করে তারাও তাদের এমনি করিয়া রঙ মাখাইয়া সাজাক তাই তারা চায়। তখন আকাশে রঙ ফুলে ফুলে রঙ, পাতায় পাতায় রঙ। রঙ মানুষের মনে মনে। তারা তাদের নৌকাগুলিকেও সাজায়। বৌ-ঝিরা ছোট থলিতে আবির নেম, আর নেয় ধানদূর্বা। জলে পায়ের পাতা ডুবাইয়া থালিখানা আগাইয়া দেয়। নৌকাতে যে পুরুষ থাকে সে থালির আবির নৌকার মাঝের গুরায় আর গলুইয়ে নিষ্ঠার সহিত মাখিয়া দেয়। ধানদূর্বাগুলি দুই অঙ্গুলি তুলিয়া ভক্তিভরে আবির মাখানো জায়গাটুকুর উপর রাখে। এই সময়ে বউ জোকার দেয়। সে-আবিরের রাগে তিতাসের বুকেও রঙের খেলা জাগে। তখন সন্ধ্যা হইবার বেশি বাকি নাই। তখনো আকাশ বড় রঙিন।—তিতাসের বুকের আরসিতে যে আকাশ নিজের মুখ দেখে সেই আকাশ।

চৈত্রের খরার বুকে বৈশাখের বাউল বাতাস বহে। সেই বাতাস বৃষ্টি ডাকিয়া আনে। আকাশে কালো মেঘ গর্জায়। লাঙ্গল-চষা মাঠ-ময়দানে যে ঢল হয়, ক্ষেত উপচাইয়া তার জল ধারাস্রোতে বহিয়া তিতাসের উপর আসিয়া পড়ে। মাঠের মাটি মিশিয়া সে-জলের রঙ হয় গেরুয়া। সেই জল তিতাসের জলকে দুই এক দিনের মধ্যেই গৈরিক করিয়া দেয়। সেই কাদামাখা ঠাণ্ডা জল দেখিয়া মালোদের কত আনন্দ। মালোদের ছোট ছোট ছেলেদেরও কত আনন্দ। মাছগুলি অন্ধ হইয়া জালে আসিয়া ধরা দেয়। ছেলেরা মায়ের শাসন না মানিয়া কাদাজলে দাপাদাপি করে। এই শাসন না মানা দাপাদাপিতে কত সুখ! খরার পর শীতলের মাঝে গা ডুবাইতে কত আরাম।

(গ) জুলাইয়ে বিনা বেতনে কাজের আর্জি এআইয়ের

নয়াদিল্লি, ১৯ জুন : এ বার বিনা বেতনে কাজ করার আবেদনের পালা এয়ার ইণ্ডিয়ার।

দু'দিন আগেই কর্মীদের এক মাস বিনা বেতনে কাজ করার আর্জি জানিয়েছিল ব্রিটিশ এয়ার। আর আজ সেই একই আর্জি নিয়ে সংস্থার পদস্থ কর্মীদের দ্বারস্থ হল ভারতের রাষ্ট্রায়ত্ত বিমান সংস্থা এয়ার ইণ্ডিয়াও (এআই)। এর আগে অর্থাভাবে জুনের

Scanned with CamScanner

বেতন ১৫ দিন পিছানোর কথা জানায় এআই। তাই নিয়ে প্রবল বিক্ষোভের মুখেও পড়েছে সংস্থা। এআই মুখপাত্র জানিয়েছেন, এ বার সংস্থার সিএমডি অরবিন্দ যাদব জিএম-সহ সব এগজিকিউটিভকে জুলাইয়ের বেতন ও উৎসাহভাতা না-নেওয়ার অনুরোধ করেছেন।

—পি টি আই

(ঘ) কেজি বেসিন নিয়ে

মুম্বই, ১৯ জুন ঃ কেজি বেসিনের গ্যাস নিয়ে অম্বানীর ভাইদের যে বিরোধ চলছে, তাতে কেন্দ্রের হস্তক্ষেপ প্রয়োজন বলে মন্তব্য করেছেন পেট্রোলিয়াম মন্ত্রী মুরলী দেওরা। গত ১৫ জুন মুম্বই হাইকোর্ট মুকেশের রিলায়্যান্স ইণ্ডাস্ট্রিজকে তাদের কেজি বেসিনে উৎপন্ন গ্যাস অনিলের সংস্থাকে সরবরাহের নির্দেশ দেয়। এর পর দুই ভাই-ই দেওয়ার সঙ্গে দেখা করেন। দেওরা বলেন, "আমি ওঁদের সঙ্গে যোগাযোগ রাখছি। তবে সরকারের হস্তক্ষেপ জরুরি। কারণ, এর দরুন কেজি বেসিনের গ্যাস থেকে প্রাপ্য রাজস্ব হারাচ্ছে সরকার। দুর্ভাগ্যক্রমে দুই ভাইয়ের মধ্যে সুসম্পর্ক নেই।"

—পি টি আই

(ঙ) সিইএসসি 1912 ও 4403 1912 পরিষেবা ব্যাহত

শুক্রবার সকাল ১১টায় সল্টলেকের মিলেনিয়াম সিটি আইবিএম কমিউনিকেশন সেন্টারে অগ্নিকাণ্ডের ফলে সিইএসসি 1912 ও 4403 1912 পরিষেবা ব্যাহত হয়েছে।

আমরা আনন্দের সঙ্গে জানাচ্ছি, 4403 1912 পরিষেবা ১৯ জুন, ২০০৯ সন্ধ্যা ৬টায় ফিরিয়ে আনা সম্ভব হয়েছে। 1912 নম্বরটির মেরামতির কাজ চলছে।

গ্রাহকদের অসুবিধার জন্য সিইএসসি ক্ষমাপ্রার্থী।

2. निम्नलिखित का बांग्ला में अनुवाद कीजिए :

(क) भारत-रत्न भीमसेन जोशी : कण्ठ-कीर्ति का राग मुलतानी

रमेश दवे

समय एक प्रकार का शून्य ही है क्योंकि उसकी कोई देह या आकृति नहीं होती। समय फिर भी हर क्षण उपस्थित है, सृष्टि के साथ चलता, अथक बेअटक, प्राणी मरता है, प्राण नहीं। इसी प्रकार समय की गणना करने वाले मरते हैं, समय नहीं। समय को अस्तित्व देते हैं, कुछ ऐसे व्यक्तित्व जिन्हें देखकर लगता है वे स्वयं समय हैं और निराकृत-समय उनके रूप में गुण में आकृत हो उठा है। भीमसेन जोशी एक प्रकार से समय के आकृत अस्तित्व थे। उन्हें देखकर, सुनकर लगता था जैसे समय उनके साथ, उनके पास, उनके भीतर, बाहर, सब तरफ ठहर गया है, शायद समय भी चाहता हो उनके कण्ठ की कलित ध्वनि, उनकी गायकी की साम-संगीत।

कण्ठ संगीत एक कठिन साधना है। ध्रुपद गाएँ, खयाल गाएँ या नाना प्रकार जटिल राग, कोमल स्वर हों या गान्धार, कितनी मात्रा का खयाल है और कितने लम्बे आलाप का ध्रुपद इन सब की गायकी तभी सम्भव होती है, जब कण्ठ-साधना एक घोर-तपस्या का रूप ग्रहण कर लेती है। तप से तपा कण्ठ बैठता नहीं, साधना से सम्पन्न संगीत ही कण्ठ में सधता है। कहा जाता है उदासी का राग मुलतानी भीमसेन जोशी जब गाते थे तो लगता था उदासी आनंद बनकर बह उठी हो। वे गाते थे तो मनुष्य ही चराचर निस्तब्ध होकर उन्हें सुनता था। भारत भवन में उनके सुपुत्र और उन्होंने जब गाया तो लगभग 2-3 हजार श्रोता ही मंत्र-मुग्ध नहीं हुए बल्कि ऐसा लगा भोपाल-ताल की लहरें उठ-उठकर उन्हें निहार रहीं हैं और सुन रही हैं, वनस्पति का लगा जैसे संगीत-संध्या प्रभातमय, प्रकाशमय और प्रकृति से आनंदमय हो उठी हो। अवसर था गुन्देचा बन्धुओं के ध्रुपद गुरुकुल के उद्घाटन का जिसमें भीमसेन जोशी न केवल गुन्देचाओं के अनुग्रह-आग्रह को सार्थक कर रहे थे और ध्रुपद के दीवानों को राग-भीमसेन से झूमने को उमंगित कर रहे थे।

भीमसेन जोशी का नाम लेते ही भारतीय शास्त्रीय राग परम्परा की एक निरभ्र छटा छा जाती है पूरे संगीत जगत् पर। बड़े गुलाम अली खां साहब, अमीर खां साहब, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, गंगूबाई हंगल, कुमार गंधर्व, कृष्णराव पंडित, पलुस्कर घराना, मेवाती घराने के पं. जसराज, शोभा गुर्टू, बेगम अख़्तर, शुभा मुद्गल जैसे अनेक नाम ऐसे लगते हैं जैसे ये हमारी शास्त्रीय संगीत सम्पदा की एक विपुल रत्न-राशि है। लता मंगेशकर और मंगेशकर बहनों ने भले ही इन शास्त्रज्ञों की तरह शास्त्रीय गायन नहीं किया किन्तु सुगम संगीत और सेमी क्लासिकल गाकर उन्होंने जो विश्वख्याति अर्जित की उससे लगता है लता मंगेशकर स्वयं संगीत सरस्वती हैं जिनके साथ उनकी बहनें वीणा की तरह स्पन्दित हैं।

वैसे तो सम्पूर्ण कण्ठ संगीत ध्रुपद या खयाल में निबद्ध माना जाता है लेकिन कुमार गंधर्व ने जब कबीर गाया, मालवी-गीतों में पृथक् शास्त्रीय राग-रचना की तो लगा संगीत तो प्रकृति की आत्मा है, मनुष्य की प्राणशक्ति है। इसी प्रकार भीमसेन जोशी चाहे राग मुलतानी गाएँ या भजन या 'मिले सुर में सुर हमारा' – सब सुनकर ऐसा लगता है जैसे पवन, सागर, पृथ्वी, प्रकृति सब एक साथ भीमसेन जोशी के कण्ठ में लहरा उठे हों। भीमसेन जोशी के संगीत में स्वर और शब्द एकाकार हो जाते थे जबकि पं. जसराज शब्द को उसकी उपस्थिति का आभास कराते हुए गाते हैं। किशोर अमोलकर गाती हैं तो शब्द बरसात की बूँदों की तरह गूँजते हैं और गंगूबाई हंगल गाती थीं तो लगता था संगीत ने स्त्री-पुरुष या कण्ठ-भेद ही संगीत में विलीन कर दिया है। बड़े गुलाम अली साहब के आलाप से लेकर गमक तक सुनकर हमारे दिल की धड़कन ऐसी हो जाती

Scanned with CamScanner

थी जैसे वह भी संगीत के लिए मचल रही हो। भीमसेन जोशी जैसे गायक जब किसी देश और उसकी कला-मनीषा में मौजूद होते हैं तो साहित्य हो, कला हो,. संगीत हो, सबसे संस्कार उत्पन्न होते हैं। भीमसेन जोशी या गुलाम अली खां साहब के होने ने ही तो हमें संगीतकारों की पीढ़ियाँ दीं और आज जो युवा संगीतकार गा रहे हैं, यह गायकी एक प्रकार से भीमसेन जोशी जैसे गायकों की शास्त्रीय कला-कीर्ति का कलश सर पर रखने के समान है।

भीमसेन जोशी भारत-रत्न हों या विश्व-रत्न लेकिन यह रत्नमयी आभा उनके संगीत-रत्न होने से ही उन्हें मिली है। आलाप, द्रुत, विलम्बित, गमक, गति, अखण्डित लय इन सब पर कण्ठ की प्रत्येक कोशिका से जो नियन्त्रण पंडित भीमसेन जोशी ने साधा था, उससे लगता है सम्भवतया संगीत वह शक्ति है जो ताप उत्पन्न करे तो राग-दीपक बनकर प्रकाशवान् हो उठे और ताप-शीतल करे तो मेघ मल्हार बनकर, 'मियाँ की तोड़ी बनकर बरस पड़े। तानसेन को तो देखा नहीं, पं. हरिदास को भी, बैजू बावरा को भी, यहाँ तक कि बड़े गुलाम अली खां साहब को भी, मगर यदि हमने अपनी भौतिक आँखों से भीमसेन जोशी को देखा-सुना है तो लगता है ये सब गायक अपनी दिव्य छवि में भीमसेन जोशी में उतर आए हों। समावर्तन का यह रंगशीर्ष संगीत और उनकी स्मृति को एक नम्र नमन है।

(ख) प्रभाकर माचवे को प्रेमचन्द का पत्र

प्रिय प्रभाकर,

मैं तुम्हें कई दिनों से पत्र लिखने का इरादा कर रहा था पर तुम्हारे पहले पत्र में तुम्हारा पता न था। कल तुम्हारे दोनों लेख मिल गए। मैंने खाण्डेकर जी की कहानी पढ़ी। वास्तव में बहुत सुन्दर चीज है। हाँ! अन्त में या तो अनुवाद में कुछ रह गया है या और कोई बात है। जमना में ताज का प्रतिबिम्ब कैसे कुछ और हो गया यह मैं न समझ सका। मगर इस कहानी को छापने के लिये मुझे खाण्डेकर जी से अनुमति लेनी पड़ेगी। मुझे उनका एड्रेस मालूम नहीं। तुम लिख दो तो मैं उन्हें पत्र लिखूँ। यदि वह अनुमति न देंगे तो कैसे छपेगी। 'मराठी के तीन उपन्यासकार' मार्मिक आलोचना है! वह मैं अक्टूबर के अंक में दे रहा था। तुम्हें यह धन्यवाद दूँ तो गोया यह मेरा काम होगा, तुम्हारा काम नहीं। इसलिए धन्यवाद न दूँगा। पर तुम्हारी लगन सराहनीय है। दूसरे तीसरे महीने हंस के लिये कुछ लिख दिया करो। मैं तो समझता हूँ अगर अनुवाद न करके तुम मराठी के अच्छे उपन्यासों की विस्तार से आलोचना कर दिया करो। तो वह एक चीज हो जाएगी और संभव है पुस्तक बन जाए। मि. फड़के, देशपाण्डे (पु.य.) और खाण्डेकर तीनों मास्टरों की सर्वोत्तम कृतियों की आलोचना तीन महीने में कर डालो। इसमें तुम्हें परिश्रम कम पड़ेगा और तुम्हारी पढ़ाई में बाधा न पड़ेगी।

तुम्हारी कहानी 'दूध का पानी' मुझे बहुत अच्छी लगी, लेकिन तुम जानते हो मैं खाली भावुकता नहीं चाहता, कहानी में कुछ मतलब की बात भी चाहता हूँ। वीरेन्द्र कुमार ने अभी एक और संस्मरण भेजा है। किसी गुजराती युवती की प्रेम-कथा है। मेरा विश्वास आत्म-लग्न में नहीं है। विवाह एक कांट्राक्ट सही, लेकिन जब कांट्राक्ट पूरा हो गया तो बिना विशेष कारण के उसकी उपेक्षा को मैं बेईमानी समझता हूँ – उसका हृदय से पालन होना चाहिए। मगर उनका आग्रह है कि वह कहानी अवश्य छपे। इसलिए छापूँगा।

शुभाकांक्षी
प्रेमचन्द

(ग) धर्मवीर भारती द्वारा वीरेन्द्र जैन को पत्र

प्रिय भाई वीरेन्द्र,

पता नहीं तुम मुझे याद रखते हो या नहीं, लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है वह मखमली शबे मालवा, महू का अनोखा कवि सम्मेलन और दिल के दुखते हुए स्थल को छू लेने वाली पंक्ति 'प्रभु जीसस के आसूँ-सी तुम'।

मैं था माखनलाल जी के साथ, नाम धर्मवीर भारती, परिचय एक दिन का लेकिन बाद में दादा से कितनी ही बातें मालूम हुईं। फिर जहाँ तक ख्याल पड़ता है जब तुम बम्बई में गए ही गए थे तब थोड़ा-सा 'ख़तूत' का विनिमय भी हुआ था। अभी दो सप्ताह पहले अंचल यहाँ आए तो यूँ ही ज़िक्र छिड़ गया तुम्हारा, कल जोशी जी (इलाचन्द्र) ने तुम्हारे खत का ज़िक्र किया। आज अभियान के मुक्ति अंक में तुम्हारा नाम देखा और 'चेतना' में तुम्हारा पता। इसलिए सारे कामधाम पर ठोकर मारकर पहले तुम्हें खत लिख रहा हूँ।

मैंने खुद तो पढ़ा नहीं पर अंचल बता रहे थे कि चेतना में परदेशी नाम से तुम्हारी जो Controversy नागर के साथ चल रही थी। मैं तुम्हारे विचारों से बहुत हद तक सहमत हूँ।

तुम्हें ख्याल होगा कि जब हम लोग मिले थे तब मैं स्थानीय प्रगतिशील लेखक संघ का मंत्री था। उसके बाद उनकी कला-घातक संकीर्ण नीति से मतभेद हुआ, झगड़ा हुआ और उसके बाद आत्मा की ईमानदारी ने यह तकाजा किया कि मैं उनकी नीति के खिलाफ विद्रोह करूँ। यहाँ के पत्रों में कुछ लिखता रहा और एक काफी बड़ी पुस्तक 'प्रगतिवाद : एक समीक्षा' शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। इसी महीने के अन्त तक शायद आ जाए जिसमें मैंने उन सभी प्रश्नों पर लिखा है जो आज के एक ईमानदार लेखक के सामने गम्भीर समस्या बनकर आते हैं। इसके साथ ही साथ मैंने सोवियत साहित्य और हिन्दी के तथाकथित प्रगतिवादी साहित्य की भी तुलनात्मक आलोचना की है। उसे पढ़कर बहुत ही प्रसन्न होंगे ऐसा मेरा विश्वास है। पिछले महीने मेरा एक खूब बड़ा-सा उपन्यास भी आया है – 'गुनाहों का देवता' वह भी तुम्हारे पास भेजूँगा। तुम्हारे हाल-चाल से मैं जरूर वाकिफ होना चाहता हूँ।

बहुत स्नेह से
भारती

Scanned with CamScanner

अनुवाद के लिए उपयोगी शब्दकोश

राजपाल हिंदी शब्दकोश		डॉ. हरदेव बाहरी राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
त्रिभाषा शब्दकोश (Bengali-Hindi-English)	--	विधु भूषण दासगुप्ता समन्वय भारती, दासगुप्ता पब्लिकेशन, कोलकाता
त्रिभाषा शब्दकोश (Hindi-Bengali-English)	--	विधु भूषण दासगुप्ता समन्वय भारती, दासगुप्ता पब्लिकेशन, कोलकाता
संसद बांग्ला अभियान	--	साहित्य संसद, कोलकाता

Scanned with CamScanner